

ॐ

55



श्री राज्ञास्तुति

विरचिता

No. पुण्य-पाद-श्री स्वामी व्यध्याधर जी
Date. सुभाषितक तथा प्रकाशक :

संस्कृत-श्री गोपी नाथ सपरु "मदन" काशमीरी

मानु मुहल्ला, श्री नगर, काशमीर ।

प्रथम बार १००० सर्वाधिकार सुरक्षित । मूल्य १० पैसे

अस्तु मा अमृतं गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।

देवी दर्शनकूप्य प्रताप दि न्यग्रन्
गुण राग पनुन दिम कनन्
च्यानी नाम वली च्यतम गच्छू थवुन्
पादन अथव सीव करुन् ।

वानी पूज तोतायि हन्ज दिम सता
गच्छू ग्वन तू कीर्तन करुन्
यथ यथ जायि उपासन भगवति

आसी गच्छय वुय करुन् ॥२८-२॥ (सपरू)

ॐ नमः श्री जगदम्बायै ॐ

ॐ विश्वेश्वरी निखिल देव महर्षि पूज्या,
सिंहासना त्रिनयना भुजगोपवीता ।
शङ्खाम्बुजास्यऽमृत कुम्भक पञ्च शाखा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१॥

* भाष *

जगत ईश्वरी त्रि यसदीव यर्ष सारी पूजान् ,
सूद आसनस सरूप नाल्य त्र्यन्यत्रल्लय दारान् ।
अथि लुस खडग अमृत नूट शङ्ख पदम आसान् ,
राज्ञा द्रव्य भगवती रुजिन प्रसन्न पाठय ॥१॥

जन्माटवीप्रदहने दववहि भूता,
तत्पाद पङ्कजरजोगत चेतसां या ।
श्रेयोवतां सुकृतिनां भवपाश भेत्री,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥२॥

* भाष *

इमज्जन चरण छि अमि सून्दि मनि मज्ज दारान् ,
जन्म वन वनिथ अग्नी छख लादि जालान् ।
भक्तयन इमन युसू वन्दन संसार चटान् ।
राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥२॥

जन्माटवीप्रदहने

द्ववह्नि भूता,

तत्पाद पङ्कजरजोगत चेतसां या ।

श्रेयोवतां सुकृतिनां भवपाश भेत्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥२॥

* भाष *

इमज्जन चरण छि अमि सून्दि मनि मग्ग दारान् ,

जन्म वन वनिथ अग्नी छख लादि ज्ञालान् ।

भक्तियन इमन युसू वन्दन संसार चटान् ।

राज्ञा द्वह्य भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥२॥

देव्या ययाऽनुज राक्षसदुष्टचेतो,

न्यग्भाषितं चरणनूपुरशिञ्जितेन ।

इन्द्रादिदेवहृदयं प्रविक्रामयन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥३॥

* भाष *
*

यमि दीविये असुर दानव दुष्ट महान् ,

रुन्नि पादनूय तल रटिथ श्वन्नि युस सपनान् ।

इन्द्राज्ञ व्ययि ति दीवन हृदयस सु फलवान् ,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥३॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (६) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दुःखार्णवे हि पतितं शरणागतं या,

चोद्धृत्य सा नयति धाम परं दयाब्धि ।

विष्णुर्गजेन्द्रमिव भीत भयापहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥४॥

* भाष *

शरणागतन तू प्यमृत्यन यूस दुःख छु आसान् ,

सुय दुःखकरानल्लय मनि दूर म्मुक्ती छि दिवान ।

भय मन्जूर छान युथ रल्लान हस्त व्यण भगवान् ,

राज्ञी द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥४॥

यस्या विचित्रमखिलं हि जगत्प्रपञ्चं ,

कुक्षौ विलीनमपि सृष्टिविसृष्टिरूपात् ।

आविर्भवत्यविरतं चिदचित्स्वभावं ,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥५॥

✽ भाष ✽

युष्म सौर जगत रंगू रंगू स्थावर जन्गम रूप,

तस मन्त्र ननिथ सू आसान उत्पत्त प्रलय रूप ।

व्यग्रि सुय तिथूय छु नेरान युद ओस प्रलय रूप,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठय ॥५॥

यत्पादपङ्कजरजःकणज

प्रसादा,

द्योगीश्वरैर्विगतकल्मषमानसैस्तत् ।

प्राप्तं पदं जनिविनाशहरं परं सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

यमि सून्नि पादगर्दि सूत्य योगी श्वरत्र मन ,

मल तथ छुलुख अदू च्छयुनुख ज्योन मरन बन्धन ।

प्रसाद वन्योख परम धाम प्रोवुख छि रोजान ,

राज्ञा द्वहय भगवती रुजिन प्रसन्न पाक्य ।

यत्पादपङ्कजरजांसि मनोमलानि,

संमार्जयन्ति शिवविष्णुविद्मि देवैः ।

मृग्यान्यऽपश्चिमतनोः प्रणुतानि माता,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

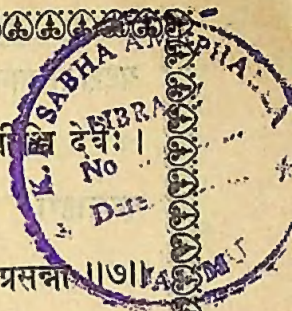
* भाष *

यसि सून्जि पाद गर्दि सूत्य मन मल छु हारान् ,

ब्रह्मा विष्णु तू शिव छी तिम पाद च्छारान् ।

पाश्चात् जन्म पुरष छी माता च्य नमान् ,

राज्ञा ब्रह्म भगवती रुजिन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥



यदर्शनामृतनदी

महदोद्युक्ता,

संज्ञायत्यखिलभेदगुहास्वनन्ता ।

तृष्णाहरा

सुकृतिनां

भवतापहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥८॥

* भाष *

अमृत वानि वरिथूय दर्शन नदी स्वयः

स्वयं छय अनन्त विन-भाव ग्वफूनूय छय यूप सुय ।

सन्ताप त्रेव चट्टवूनि सत पुरुषनय स्वय,

राज्ञी द्वहय भगवती रूज्ञेन प्रसन्न पाठ्य ॥८॥

यत्पादचिन्तन

दिवाकररश्मिमाला,

चान्तर्वहिष्करणवर्गसरोजपण्डम् ।

ज्ञानोदये सति विकास्य तमोपहर्त्री,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

* भाष *

जृचू सूर्य सूजृ हिममाल सुमरन छि यस पाद,

अन्ताहकर्ण-वह्यषकर्णः पम्पोष डल पाद ।

बुज्जवान लय ज्ञान फूलवान गटकार चटान पाद,

राज्ञा द्वहय भगवती रूजिन प्रसन्न पाठ्य ॥६॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ (१२) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वाग्वादिनी हृदय पुष्कर चारिणीया ।

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥७॥

*** भाष ***

हृदयि कमलसूय मन्ज वसान स्वय वाक्वानी ।

राज्ञां द्वहय भगवती रुञ्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥७॥

यासोम सूर्य वपुषा सततं सरन्ती,

मूलाश्रयात्तडिदिवाऽऽविधिरन्ध्रमीदृया ।

मध्यास्थता सकल नाडिसमूह पूर्णा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्नान् ।

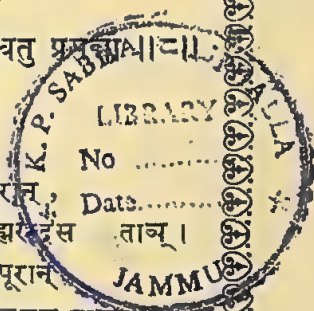
* भाष *

सूर्यचन्द्र रूप हिपज्जन व्रथितूय छय फेरान्,

मूलाधार प्यदू ब्रह्म ब्रह्मरूपस ताब् ।

मन्त्रभाग विहि छय सारिनूय नाडियन स्व पूरान्

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्ये तान् ।



[illegible]

चैतन्य पूरित समस्त जगद्विचित्रा,
मातृ प्रमेयपरिमाणतया चकास्ति ।
या पूर्णवृत्त्यर्हामति स्वपदाधिरूढा,
राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥६॥

*** भाष ***

चैतन्य जगत युसु लु ज्ञन रंगू रंगू वनानी,
 ज्ञान ज्ञानवुन तू ज्ञाननी अयि किन्य व्रजानी ।
 यस पूर्ण भाव अहं पद पननुय थवानी,
 राज्ञी द्वहय भगवती रुजिन प्रसन्न पाक्य ॥६॥

या चित्क्रमक्रमतया प्रविभाति नित्या,

स्वातन्त्र्य शक्तिरमला गतभेद भावा ।

स्वात्मस्वरूपमुविमर्शपरैः सुगम्या,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१०॥

* भाष *

कर्म-अकर्म न्यत शक्त युसू द्रह छय वासान् ,

विन भाव किन्य स्व निर्मल सुतन्त्रभाव सान ।

इम आत्म न्यनतन करान तिम छी लवान थान् ,

राज्ञा द्रहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥१०॥

[illegible]

याकृत्य पञ्चकनिभालनलालसैस्तैः,

सन्दृश्यते निखिल वेद्यगतापि शश्वत् ।

सान्त्वयिता परप्रमातृपदं विशन्ती,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥११॥

*** भाष ***

इमं ह्यीं लङिथ व्यमर्शस मन्ज पञ्चकृतूकिसू,

प्रथं कुनि मनज्जं बुद्धान् न्हिस प्रथं कुनि बुद्धान् न्हिस् ।

दृष्ट्यार लय पद रटिथ स्वय शक्ति लय गुण लिस,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥११॥

याऽनुत्तरात्मनि पदे परमाऽमृताब्धौ,

स्वातन्त्र्यशक्ति लहरिवहः सरन्ती ।

संलीयते स्वरसतः स्वपदे सभावा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१२॥

*** भाष ***

पानि पान थानू पनने यवसू व्वथि तिच्छूय जन् ,

यिथू ळुवुथि तरन्ग अमृत सूत्य भरिथूय समन्द्रन् ।

व्ययि सूत्र्य निवान छि सोरुय फीरिथ त्वतुय ज्ञन,

राज्ञा द्वहय भगवती रुज्जिन प्रसन्न पाठ्य ॥१२॥

मेरोः सदैवहिदरीषु विचित्रवाग्भिः,

गायान्ति या भगवतीं परिवादिनीभिः ।

विद्याधराहि पुलकाङ्कित विग्रहाः सा,

राज्ञी सदा भगवती भवतु प्रसन्ना ॥१३॥

* * *

न्यती समीरच्यन गवफन नाना प्रकार गीत्,

ग्यवान छि च्ये भगवती सेतार स्वर सूत्य ।

रूमू हर्ष सान व्यध्याधर गायन करान कूत्य,

राज्ञा द्वहय भगवती रूजिन प्रसन्न पाठ्य ॥१३॥

राज्ञी सदा भगवती मनसा स्मरामि ॥

राज्ञी सदा भगवती वचसा गृणामि ॥

राज्ञी सदा भगवती शरसा नमामि ॥

राज्ञी सदा भगवती शरणं प्रपद्ये ॥१७॥

* भाष *

राज्ञा द्रव्य भगवती मन् क्रिय स्वरात् हुस ॥

राज्ञा द्रव्य भगवती व्यवि क्रिय परान हुस ॥

राज्ञा द्रव्य भगवति कल क्रिय नमान हुस ॥

राज्ञा द्रव्य भगवती आमुत शरण हुस ॥

ऋषाः स्तोत्रमिदं पुण्यं यः पठेद्भक्तिमान्नरः

नित्यं देव्याः प्रसादेन शिवसायुज्यमाप्नुयात् ॥

ति श्री जगदम्बास्तुति-राजानक-विध्याधर विरचिता शुभदा

भूयात् ॥

॥ इति शिवम् ॥

कृतज्ञता

ज्ञात होंवे कि श्री स्वामी विद्याधर जी महाराज विरचिता श्री राज्ञास्तुति की काशमीरी भाषा में जो टीका श्री महादेवजी ने की है उसके अतियुक्त सेवक ने अपनी बुद्धि अनुसार काशमीरी भाषा में अनुवाद किया है। जिसको देवनागरी भाषा में प्रकाशित किया।

इस कार्य में श्रीमान नील कण्ठ जी सेवक श्री स्वामी विद्याधर जी का मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। स्वामी जी के सेवक और राज्ञा-भगवती प्रेमियों से आशा है कि अगर मेरी कोई त्रुटी रह गई हो तो क्षमा करें। (सपरू) १३-२-६५

शक्ति प्रिंटिंग प्रैस जम्मू में छपकर प्रकाशित की।